ॐ

सहज योग

ध्यान कैसे करें

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री गणेश साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महालक्ष्मी,
महासरस्वती, महाकाली, त्रिगुणात्मिका,
कुण्डलिनी साक्षात् श्री आदिशक्ति माताजी
श्री निर्मला देव्यै नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री कलकी साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नम
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री कलकी साक्षात्
श्री सहस्त्रार स्वामिनी, मोक्षप्रदायिनी माताजी
श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ॐ

65398014/15, 9212012772 • Inditalk Inc., 65255

ध्यान (Meditation)

– परम पूज्य माताजी द्वारा

सुबह को उठें स्नान करें, आराम से बैठें और शान्त रहें। प्रातः शान्त रहें और ध्यान में बैठें–क्योंकि उस समय दैवी किरणें सूर्य में पीछे से आती हैं और इसी तरह चिड़ियों की सुबह होती है और इसी तरह फूल खिलते हैं। ये सब इसी तरह जागते हैं। और अगर आप संवेदनशील हैं तो आपको ये एहसास होगा कि आप दस साल छोटे लगने लगेंगे। सच में ये बहुत ही अच्छी बात है कि आप सुबह उठे और फिर स्वतः ही आप जल्दी भी सो जायेंगे। ये सुबह उठने के लिए है, सोने के लिए मैं नहीं बताऊँगी क्योंकि व आप अपने आप प्रबन्ध कर लेते हैं। फिर सुबह के समय आप [illegible] करें।

ध्यान में आप विचार न लाने की कोशिश कीजिये। मेरी तस्वीर पर ध्यान केन्द्रित करके आप विचारों को न लाने की कोशिश कीजिये और आप ध्यान में चले जाइये। एक आसान तरीका अपने विचार रोकने का ये है कि आप 'लाईस प्रेयर' कर क्योंकि वह आज्ञा अवस्था है। इसलिए सुबह के समय आप लाईस प्रेयर या गणेश मन्त्र का ध्यान करें और आप ये भी कह सकते हैं -- "मैं क्षमा करता हूँ।" आप गणेश के मन्त्र से शुरुआत कर सकते हैं या लाईस प्रेयर और फिर कहें "मैं क्षमा करता हूँ"। अब आप विचारहीन जाग्रत अवस्था में हैं।

अब आप आत्मसमर्पण कर दें। अब अगर चक्र पकडे गये हैं तो आप कहिये "माँ हम इसे आत्मसमर्पण करते हैं"। अगर आपके दिल में प्यार है और दिल साफ है तो यह बहुत अच्छी है और ऐसा करना मतलब आत्मसमर्पण करना है।

अब सारी चिंतायें अपनी माँ पर छोड़ दीजिये। हर चीज अपनी माँ के लिए। मगर आत्मसमर्पण एक महत्वपूर्ण बात है जो कि इस अहम से भरे समाज में काफी कठिन है।

सुबह के समय आप आपने हाथ ज्यादा न हिलायें। आप पायेंगे कि आपके बहुत से चक्र ध्यान करते वक्त खुल गये हैं।

अपने हृदय में प्रेम की भावना रखिये। अपने हृदय में कोशिश करिये और अपने हृदय के भीतर अपने गुरू को रखिये। अपने हृदय में स्थापित करने के बाद हमें पूर्ण भक्ति और श्रद्धा से मस्तिष्क झुकाना चाहिए। आत्म साक्षात्कार के बाद अब आप अपने दिमाग से कुछ भी कार्य कीजिए वह काल्पनिक नहीं होगा क्योंकि आपकी कल्पनाशक्ति व दिमाग स्वयं प्रकाशित हो चुका है।

अतः आप स्वयं को विनम्र भाव से आपने गुरु, अपनी माता के श्रीचरणों में समर्पित कीजिए।

अब अगर आपके मन में विचार आ रहे हों तो पहले मन्त्र का उच्चारण करें और फिर अपने भीतर देखें और आपको गणेश का मन्त्र लेना चाहिए, यह कुछ लोगों को मदद करता है और फिर भीतर देखें (झांके)।

पहले विचार.................. अब विचार के लिए आपको निर्विचार का मंत्र लेना होगा,

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री निर्विचार साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

आप पायेंगे कि विचार बंद हो गये हैं अब कोई शंका नहीं है यदि अभी भी दिमाग पर दबाव है और अगर ये अहम् है तो आप तीन बार कहिये--

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महत अहमकार साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ।

अब आपको अपनी श्वांस पर ध्यान देना है । अब कोशिश करिये अपनी श्वांस को कम करने की अर्थात् जैसे आपने श्वांस बाहर छोड़ी थोड़ी देर रुकिये फिर श्वांस अन्दर लीजिये कुछ समय के लिए रुकिए । आपकी श्वांस साधारण से कम होगी । इसकी कोशिश करिये । अपने विचारों पर ध्यान दीजिए आप [illegible] पायेंगे की बंधन स्थापित हो गया है ।

अब कुण्डलिनी उठ रही है । जब आप श्वास लेते हैं तो [illegible] की कुछ जगह है बीच में जो आपने खाली छोड़ी है । श्वांस अ[illegible] लीजिए, वहीं रखिये । अब श्वांस बाहर छोड़िये और बा[illegible] रखिये । अब अन्दर लीजिए, अब ऐसे श्वांस लीजिये कि ध[illegible] कम होये । आपका ध्यान अपने हृदय में होना चाहिये, या ये आ[illegible]

भावना भी हो सकती हैं, ये अच्छा होगा कि आप थोड़ी देर के लिए श्वांस अन्दर ही रखें। अब बाहर कीजिए और थोड़ी देर के लिए बाहर ही रखिये। अब थोड़ी देर के लिए पायेंगे जैसे आप श्वांस ही न ले रहे हों, सही है। अब आप स्थापित हो गये।

अब आप अपनी कुण्डलिनी ऊपर उठाकर तीन बार बाँध लें। अब सहस्त्रार पर आप तीन बार मन्त्र का उच्चारण करें-

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री कलकी साक्षात्
श्री सहस्त्रार स्वामिनी, मोक्षप्रदायिनी माताजी
श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

अब आपका सहस्त्रार खुल गया है। अब आप पायेंगे कि आप स्थापित हो गये हैं-ये कार्य पूरा हुआ अब ध्यान में जाइये।

--परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी

True Value Hub : Delhi : Bldg. No 6, New Friends Colony, New D

चक्र शुद्धिकरण के लिए श्रीमाताजी से प्रार्थना

मध्य भाग

१. मूलाधार चक्र	श्रीमाताजी कृपा करके मुझे पावन (अबोध) बना दीजिए।
२. स्वाधिष्ठान चक्र	श्रीमाताजी कृपया मुझे शुद्ध विद्या प्रदान कीजिए।
३. नाभि चक्र	श्रीमाताजी कृपया मुझे सन्तुष्टि प्रदान कीजिए।
३.(अ) भवसागर	श्रीमाताजी कृपा करके मुझे स्वयं का गुरु बना दीजिए।
४. हृदय चक्र	श्रीमाताजी कृपा करके मेरे हृदय को प्रेम से परिपूर्ण करके मुझे निर्भय बना दीजिए।
५. विशुद्धि चक्र	श्रीमाताजी कृपया मुझे निर्लिप्त साक्षी

	बना दीजिए।
	श्रीमाताजी कृपया मुझे विराट का अंग प्रत्यंग बना दीजिए।
५.(अ) हंसा चक्र	श्रीमाताजी कृपया मुझे विवेक प्रदान कीजिए ताकि मैं स्वयं को सुधार सकूँ।
६. आज्ञा चक्र	श्रीमाताजी कृपया मुझे क्षमाशील तथा त्यागी बना दीजिए।
७. सहस्त्रार चक्र	श्रीमाताजी कृपा करके मुझे आत्मसाक्षात्कार प्रदान कीजिए। मेरे सहस्त्रार में विद्यमान रहिए। मेरे आत्मसाक्षात्कार को दृढ कीजिए। मुझे सहजयोगी बनाने के लिए कृपया आपके प्रति मेरा समर्पण तथा कृतज्ञता स्वीकार कीजिए।

बांया भाग

१. **मूलाधार चक्र**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं शिशु सम अबोध हूं।
२. **स्वाधिष्ठान चक्र**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं शुद्ध विद्या हूं।
३. **नाभि चक्र**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं सन्तुष्ट हूं। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं शान्त हूं। श्रीमाताजी मैं आपकी कृपा से उदार व्यक्ति हूं।
३.(अ) **भवसागर**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से क्योंकि मैं शुद्ध विद्या हूं अतः मैं स्वयं का गुरु हूं।
४. **हृदय चक्र**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं आत्मा हूं। कृपा करके आत्मा के विरोध मे कोई

अपराध यदि मुझसे हुआ हो तो उसे क्षमा करें। श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं माँ के प्रेम का यन्त्र हूं।

५. **विशुद्धि चक्र**	श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं आत्मा हूं और निर्दोष हूं।
६. **आज्ञा चक्र**	श्रीमाताजी कृपा करके मेरे अपराधों को क्षमा करें।
७. **सहस्त्रार**	• श्रीमाताजी आपकी कृपा से मैं सभी चुनौतियों में सुरक्षित हूं और अपना उत्थान पाने तक सभी चुनौतियों पर मैं विजय प्राप्त करूंगा। • श्रीमाताजी मैं भाग्यशाली हूं कि आपकी कृपादृष्टि मुझ पर है।

दांया भाग

१. मूलाधार चक्र	श्रीमाताजी निश्चय ही आप राक्षस हन्त्री हैं।
२. स्वाधिष्ठान चक्र	श्रीमाताजी मैं कुछ नहीं करता। निश्चय ही आप कर्ता हैं और आप ही भोक्ता हैं।
३. नाभि चक्र	श्रीमाताजी निश्चय ही आप मेरे अन्तः स्थित महान सम्मान हैं। श्रीमाताजी निःसन्देह आप ही मेरी धन तथा परिवार सम्बन्धी समस्याओं का समाधान करती हैं और मेरे कुशल–क्षेम का ध्यान रखती हैं।
३.(अ) भवसागर	श्रीमाताजी निःसन्देह आप ही मेरी गुरु एवं स्वामी हैं।
४. हृदय चक्र	श्रीमाताजी मेरे अन्दर जो जिम्मेदारी भाव

है वो आप ही हैं। निश्चित रूप से आप ही सदाचार की सीमाएं हैं तथा प्रेममय पिता की कृपा भी आप ही हैं।

५. **विशुद्धि चक्र** श्रीमाताजी मेरी वाणी तथा कर्मों का माधुर्य निश्चित रूप से आप ही हैं।

६. **आज्ञा चक्र** श्रीमाताजी मैंने सबको क्षमा किया। अपनी गलतियों के लिए स्वयं को भी क्षमा किया। कृपा करके मुझे अपनी कृपा दृष्टि में बनाए रखिए।

७. **सहस्रार**

- श्रीमाताजी निश्चय ही मेरे उत्थान मार्ग की सभी चुनौतियों पर विजय आप ही हैं।
- श्रीमाताजी निश्चय ही आप ही आदि शक्ति (Holy Spirit) हैं।

Lord's Prayer

Our father who art in heaven
Hallowed be thy name Thy kingdom come
Thy will be done
On earth, as it is in heaven
Give us this day our daily bread
And forgive us our trespasses
As we forgive those
who trespass against us
Lead us not into temptation
But deliver us from evil
For thine is the kingdom
And the power And the glory
Forever and forever Amen

श्री गुरु मंत्र

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात्परब्रह्म, श्री माताजी निर्मला दैव्यः
तस्मै श्री गुरुवे नमः।

श्री गायत्री मंत्र

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मनः ॐ जनः
ॐ तपः, ॐ सत्यम्। ॐ भूर्भुव स्वः
ॐ तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योनः प्रचोदयात्।।
ॐ आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।।

समस्त चक्रों के लिए मन्त्र

ॐ त्वमेव साक्षात् .... साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः

(रिक्त स्थान में उस चक्र से सम्बन्धित नाम का उच्चारण करें)

श्री गणेश	- बांया मूलाधार (अबोधिता, विवेक)
श्री कार्तिकेय	- दांया मूलाधार (पराक्रम, ज्ञान)
श्री गौरी गणेश	- मूलाधार (कुण्डलिनी का स्थान, पवित्रता)
श्री ब्रह्मग्रन्थिविभेदनी	- ब्रह्मग्रन्थि (भौतिक सुखों में लिप्त)
श्री ब्रह्मदेव सरस्वती	- स्वाधिष्ठान (रचनात्मकता)
श्री निर्मल विद्या	- बांया स्वाधिष्ठान (शुद्ध ज्ञान)
श्री हज़रत अली	- दांया स्वाधिष्ठान (रचनात्मक कार्य)

श्री लक्ष्मी-विष्णु	- नाभि (अवलम्ब)
श्री गृह लक्ष्मी	- बांया नाभि (पारिवारिक समस्यायें)
श्री राजलक्ष्मी	- दांया नाभि (चित्त)
श्री आदिगुरू दत्तात्रेय	- भवसागर (गुरू का स्थान)
श्री जगदम्बा	- मध्य हृदय (सुरक्षा की भावना)
श्री शिव-पार्वती	- बांया हृदय (माँ व आत्मा का स्थान)
श्री सीता-राम	- दांया हृदय (पिता का स्थान)
श्री विष्णुग्रन्थि विभेदनी	- विष्णु ग्रन्थि (अहंकार का प्रारम्भ)
श्री राधा-कृष्ण	- विशुद्धि (सामुहिकता)
श्री विष्णु-माया	- बांया विशुद्धि (आत्मसम्मान)
श्री विट्ठल रुकमणि	- दांया विशुद्धि (दूसरों के लिए आदर)
श्री हंस चक्र स्वामिनी	- हंस चक्र (विवेक, निर्णय)
श्री एकादश रुद्र	- एकादश रुद्र (भगवान् पर विश्वास)

श्री जीसस मैरी - आज्ञा (क्षमाभाव, The Lord's Prayer)

श्री महावीर - बांया आज्ञा (प्रति अहंकार)

श्री बुद्ध - दांया आंज्ञा (अहंकार)

श्री महागणेश, श्री महाभैरव,

श्री महाहिरण्य गर्भा - आज्ञा (आज्ञा के पीछे का भाग)

श्री महाकाली-भैरव - ईड़ा नाड़ी (भावनात्मक समस्यायें)

श्री महासरस्वती-हनुमान - पिंगला नाड़ी (शारीरिक समस्यायें)

श्री महालक्ष्मी-गणेश - सुषुमना नाड़ी

श्री अन्नपूर्णा मन्त्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री अन्नपूर्णा साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः।

एकादश रूद्र मंत्र

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री एकादश रूद्र साक्षात्
श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महागणेश नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महाभैरव नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री हिरण्य गर्भा नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री बुद्ध नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महावीर नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री जीज़स नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री लक्ष्मी-नारायण नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री शिव-शक्ति नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री कार्तिकेय नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महाहनुमान नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री ब्रह्मदेव सरस्वती नमो नमः
ॐ त्वमेव साक्षात् श्री सर्व मन्त्र सिद्धि विभेदिनी नमो नमः

चक्रों के सूफी व इस्लामी नाम

हिन्दी/अंग्रेजी	सूफी	इस्लाम
सहस्त्रार (Sahastrara)	हकीकत (Haquiquate)	लाहौत (Lahout)
आज्ञा (Agnya)	खफिया (Kafiyua)	जबरौत (Jab-Rout)
विशुद्धि (Vishuddhi)	रूहिया (Ruhiya)	मलखौत (Malakhout)
अनहद् (Anahat)	सिरिया (Sirriya)	साहौत (Sahout)
नाभि (Nabhi)	कालदिया (Qaldiya)	लाहौत (Lahout)
स्वाधिष्ठान (Swadhishthan)	नफासिया (Nafsiya)	नासौत (Nasout)
मूलाधार (Mooladhar)	कलाबिया (Qalabiya)	अलाम–ए–फानी (Alam-E-Fani)

RAGAS FOR CHAKRAS

Chakra	स्वर	*Raga*
Mooladhar	सा	Shyam Kalyan / Bilawal
Swadisthana	रे	Todi / Yaman
Nabhi	गा	Lalit / Gunkali
Bhavsagar (Void)	गा	Malkauns
Anhat (Heart)	म	Bhairavi / Durga / Bhairav
Vishuddhi	प	Jai Jaywanti
Agnya	ध	Bhup / Bageshri
Sahastrara	नि	Darbari / Bhairavi

श्री गणेश अथर्वशीर्ष

ॐ नमस्ते गणपतये

त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि, त्वमेव केवलं कर्ताऽसि

त्वमेव केवलं धर्ताऽसि, त्वमेव केवलं हर्ताऽसि

त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि,

त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् ।।१।।

ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि ।।२।।

अव त्वं मां, अव वक्तारं, अव श्रोतारं, अव दातारं,

अव धातारं, अवानूचानमव शिष्यं

अव पश्चात्तात्, अव पुरस्तात्, अवोत्तरात्तात्,

अव दक्षिणात्तात, अवचोर्ध्वात्तात, अवाधरात्तात्,

सर्वतो मां पाहि पाहि समंतात् ।।३।।

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः त्वमानंदमयस्यत्वं ब्रह्ममयः,
त्वं सच्चिदानंदाद्वितीयोऽसि, त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि,
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ।।४।।
सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते, सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति,
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः,
त्वं चत्वारि वाक्पदानि ।।५।।
त्वं गुणत्रयातीतः, त्वं देहत्रयातीतः
त्वं कालत्रयातीतः, त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यं
त्वं शक्तित्रयात्मकः, त्वां योगिनो ध्यायंति नित्यं
त्वं ब्रह्मा, त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं इंद्रस्त्वं

अग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं
ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ।।६।।
गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादि तदनंतरं
अनुस्वारः परतरः, अर्धेन्दुलसितं, तारेण ऋद्धं,
एतत्तव मनुस्वरूपं, गकारः पूर्वरुपं,
अकारो मध्यमरुपं, अनुस्वारश्चान्त्यरुपं,
बिन्दुरुत्तररुपं, नादः संधानं,
संहिता संधिः सैषा गणेशविद्या, गणकऋषिः
निचृद् गायत्रीच्छंदः, गणपतिर्देवता,
ॐ गँ गणपतये नमः ।।७।।
एकदंताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दंती प्रचोदयात् ।।८।।

एकदंतं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम्,
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्
रक्तं लंबोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्,
रक्तगंधानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्
भक्तानुकंपिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्,
आर्विभूतं च सृष्टयादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम,
एवं ध्यायति यो नित्यं, स योगी योगिनां वरः ।।९।
नमो व्रातपतये, नमो गणपतये
नमः प्रमथपतये, नमस्तेऽस्तु लंबोदरायैकदंताय,
विघ्ननाशिने शिवसुताय
श्रीवरदमूर्तये नमो नमः ।।१०।।

"श्री गणेश के 12 नाम"

निर्विघ्नमस्तु

सुमुख	विघ्ननाशा
एकदन्त	गणाधिप
कपिल	धूम्रकेतु
गजकर्णक	गणाध्यक्ष
लम्बोदर	भालचन्द्र
विकटा	गजानन

श्री विष्णु मन्त्र

ॐ श्री केशवाय नमः
ॐ श्री माधवाय नमः
ॐ श्री विष्णवे नमः
ॐ श्री त्रिविक्रमाय नमः
ॐ श्री श्रीधराय नमः
ॐ श्री पद्मनाभाय नमः
ॐ श्री संकर्षणाय नमः
ॐ श्री प्रद्युम्नाय नमः
ॐ श्री पुरुषोत्तमाय नमः
ॐ श्री नरसिंहाय नमः
ॐ श्री जनार्दनाय नमः
ॐ श्री हरये नमः

ॐ श्री नारायणाय नमः
ॐ श्री गोविंदाय नमः
ॐ श्री मधुसूदनाय नमः
ॐ श्री वामनाय नमः
ॐ श्री हृषीकेशाय नमः
ॐ श्री दामोदराय नमः
ॐ श्री वासुदेवाय नमः
ॐ श्री अनिरुद्धाय नमः
ॐ श्री अधोक्षजाय नमः
ॐ श्री अच्युताय नमः
ॐ श्री उपेंद्राय नमः
ॐ श्री कृष्णाय नमः।

श्रीमाताजी निर्मला देवी के 108 नाम

श्रीमाताजी
श्री महाराज्ञी
देवकार्य समुद्यता
अकुला
विष्णु ग्रन्थि विभेदिनी
भवानी
भक्ति प्रिया
भक्ति गम्या
शर्म दायिनी
निराधारा
निरंजना
निर्लेपा

13. निर्मला
14. निष्कलंका
15. नित्या
16. निराकारा
17. निराकुला
18. निर्गुणा
19. निष्कला
20. निष्कामा
21. निरूपप्लवा
22. नित्य मुक्ता
23. निर्विकारा
24. निराश्रया

25. निरंतरा
26. निष्कारणा
27. निरूपाधिः
28. निरीश्वरा
29. नीरागा
30. निर्मदा
31. निश्चिंता
32. निरहंकारा
33. निर्मोहा
34. निर्ममा
35. निष्पापा
36. निःसंशया
37. निर्भवा
38. निर्विकल्पा
39. निराबाधा
40. निर्नाशा
41. निष्क्रिया
42. निष्परिग्रहा
43. निस्तुला
44. नीलचिकुरा
45. निरपाया
46. निरत्यया
47. सुखप्रदा
48. साँद्र करूणा
49. महादेवी
50. महा पूज्या
51. महापातक नाशि
52. महाशक्तिः
53. महामाया
54. महारतिः
55. विश्वरूपा
56. पद्मासना
57. भगवती
58. रक्षाकरी
59. राक्षसघ्नी
60. परमेश्वरी
61. नित्ययौवना
62. पुण्यलभ्या
63. अचिंत्य रूपा

पराशक्तिः	77. प्राणरुपिणी
गुरुमूर्तिः	78. परमाणुः
आदिशक्तिः	79. पाशहंत्री
योगदा	80. वीरमाता
एकाकिनी	81. गम्भीरा
सुखाराध्या	82. गर्विता
शोभना सुलभागतिः	83. क्षिप्रप्रसादिनी
सत्‌चित्‌आनंद रुपिणी	84. सुधास्त्रुतिः
लज्जा	85. धर्माधारा
शुभंकरी	86. विश्वग्रासा
चण्डिका	87. स्वस्था
त्रिगुणात्मिका	88. स्वभावमधुरा
महती	89. धीरसमर्चिता

90. परमोदारा
91. शाश्वती
92. लोकातीता
93. क्षमात्मिका
94. लीलाविनोदिनी
95. श्री सदाशिव
96. पुष्टिः
97. चन्द्रनिभा
98. रविप्रख्या
99. पावनाकृतिः
100. विश्वगर्भा
101. चित्शक्तिः
102. विश्वसाक्षिणी
103. विमला
104. वरदा
105. विजया
106. वन्दारु जन वत्सला
107. सहजयोग दायिनी
108. विलासिनी
109. विश्व निर्मला धर्म दायिनी

"Those who love others are those wh
really love Me."

–H.H. Shri Mataji Nirmal

फोन पर मुफ्त सलाह ले।

प्रोफेसर सागर भारती

इन्टरनेशनल एस्ट्रोलोजर (ज्योतिष)
गोल्ड मेडलिस्ट

जटिल से जटिल समस्या के समाधान कर्ता

जैसे :- ग्रह कलेश, कारोबार में बांधा, दुश्मन व सोतन से छुटकारा, पति पत्नी मे अन बन, विदेश यात्रा, संतान प्राप्ति, भूत प्रेत, जादू टोना, मनचाहा विवाह, रोग व कर्ज मुक्ति

नोट :- प्यार में धोखा खाऐ प्रेमी व प्रेमिका एक बार जरूर मिले व सच्ची श्रद्धा ही मन में लेकर आऐ

50 अर्जुन नगर, मेन रोड, निकट कड़कड़ डूमा कोर्ट
कृष्णा नगर, दिल्ली-51, 9210391745

www.sahajayoga.org

- Essence of Honesty in Innocence
- Essence of sincerity is Innocence
- Essence of Beauty, Glory is Innocence
- Innocence is the one that gives y complete Detachment

—H.H. Shri Mataji Nirmala De

Published by: **SAHAJA YOGA CENTRE, Meerut**

Printed by: **Perfect Printers**, Meerut Ph.: (0121) 519983

www.khannapaper.com

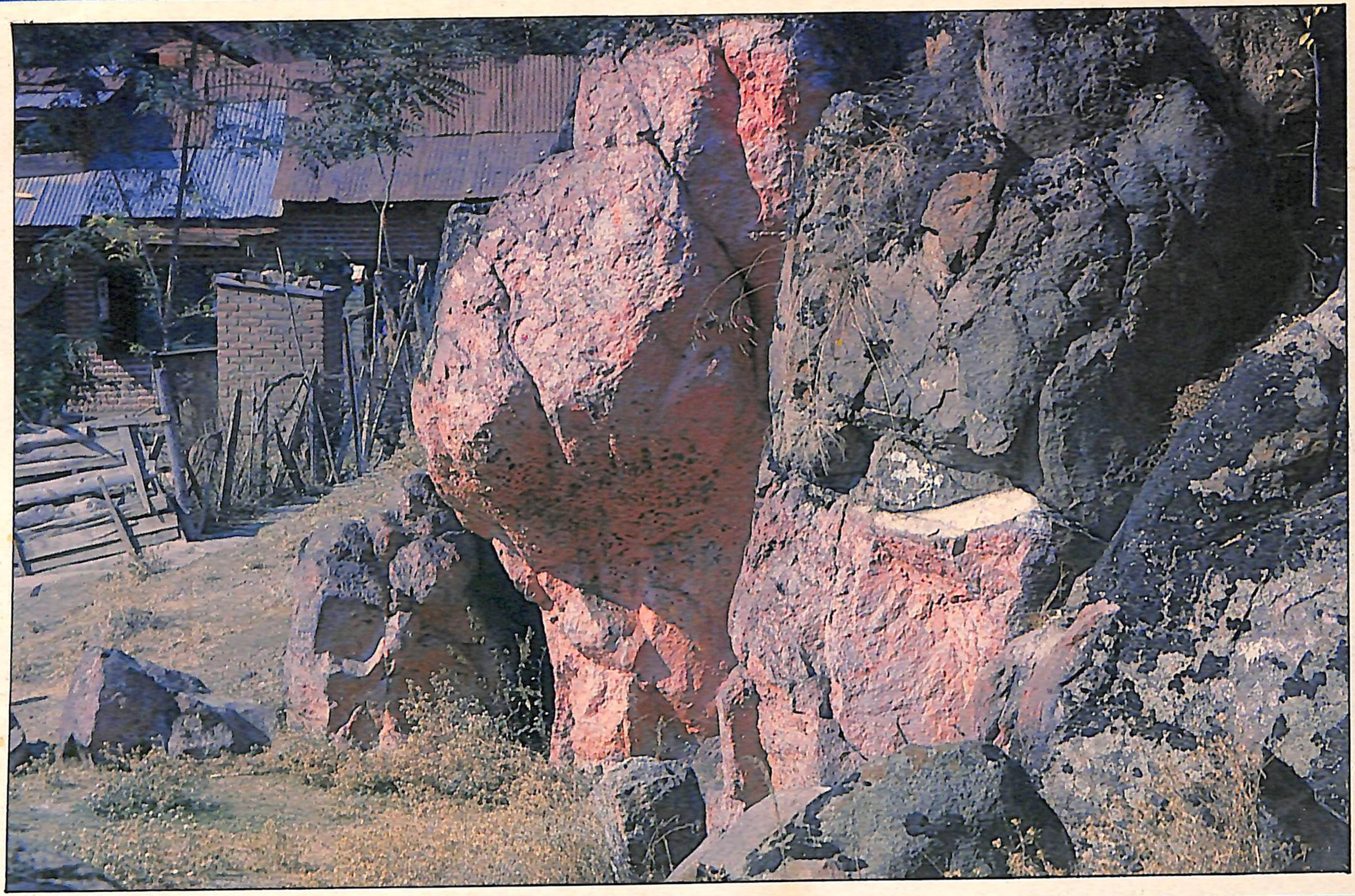

Ganapati, Designed by Virendra Kumar; Kumar Gallery

KUMAR GALLERY PVT. LTD.

11, SUNDER NAGAR MARKET
NEW DELHI-110003
Tel : 611113, 611133

Owned, Printed and Published by Manohar Kaul, 89A, Pocket C, Mayur Vihar, Phase II, Delhi-110091 and Printed at Indraprastha Press (C.B.T.), Nehru House, New Delhi-110002

Best Compliments
from

JOIN THE INDIAN NAVY

AVY

मै. उपकार ट्रेडिंग (इण्डिया) चिट फण्ड प्रा. लि.
17/24 यूसफ सराय नई दिल्ली-16
दूरभाष : 661898, 664248

मै. राजदीप विमल शोरूम
(एयर कन्डीशन्ड)
17/6 यूसफ सराय नई दिल्ली-16
दूरभाष : 657031

VIMAL®
A RELIANCE PRODUCT

मै. बी. एल. ग्लास क.
17/20 यूसफ सराय नई दिल्ली-16
दूरभाष : 667875, 656992

मै. बी. एल. गैस्ट हाउस
17 यूसफ सराय नई दिल्ली-16
दूरभाष : 667875, 656992

卐 श्री महालक्ष्म्यै नमः 卐

कराग्रे वसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती ।
कर मूले वसते ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनम् ।

आलोकमयी इस दीप–मालिका का शुभ्र प्रकाश आपके जीवन पथ को आलोकित करे। आलोकमयी उषा आपके जीवन को धन–धान्य, सुख, आरोग्य और समृद्धि से परिपूर्ण करे। सुख और समृद्धि की प्रतीक दीपावली के इस पावन पर्व पर आपके लिये हमारी शुभकामनायें अर्पित हैं।

दीनदयाल लखमीचन्द गुप्ता
यूसफ सराय नई दिल्ली-110016
दूरभाष : 664248